-11-	-११-
The Still Mind	शांत व स्थिर मन
And it is only a very still mind/ not a disciplined mind, that has understood and therefore is free. It is only that still mind that can know what is creation. Because the word God has been spoiled...	अनुशासनबद्ध मन नहीं बल्कि केवल शांत मन ही समझ पाता है, और इसीलिए वह मुक्त हो रहता है। केवल ऐसा शांत मन ही जान सकता है कि सृजन क्या होता है, क्योंकि 'ईश्वर' शब्द तो विकृत किया जा चुका है।
But to find out that something which is beyond time, you must have a very still mind. And that still mind is not a dead mind but is tremendously active; anything that is moving at the highest speed and is active is always quiet. It is only the dull mind that worries about that is anxious, fearful. Such a mind can never be still. And it is only a mind that is still that is a religious mind. And it is only the religious mind that can find out, or be in that state of creation. And it is only such a mind that can bring about peace in the world. And that peace is your responsibility, the responsibility of each one of us, not the politician, not the soldier, not the lawyer, not the businessman, not the communist, socialist, nobody. It is your responsibility, how you live, how you live your daily life. If you want peace in the world, you have to live peacefully, not hating each other, not being envious, not seeking power, not pursuing competition. Because out of that freedom from these, you have love. It is only a mind that is capable of loving that will know what it is to live peacefully.	परंतु किसी ऐसी चीज़ को जान लेने के लिए जो समय से परे है, आपको एक बहुत शांत व स्थिर मन की आवश्यकता होती है। और, ऐसा शांत व स्थिर मन कोई मृत या निष्क्रिय मन नहीं होता, बल्कि वह तो प्रबल रूप से सक्रिय रहता है। कोई भी चीज़ अपनी अधिकतम गति पर रहते हुए क्रियाशील हो तो उसमें कोई शोर नहीं होता। यह तो केवल मंद मन है जो चिंता करता रहता है तथा व्यग्र व भयग्रस्त रहता है। ऐसा मन कभी स्थिर, मौन नहीं रह पाता है। और जो मन मौन रहता है, वही मन धार्मिक मन होता है। और, केवल धार्मिक मन ही अन्वेषण कर सकता है या सृजनशील स्थिति में हो सकता है। और, केवल ऐसा मन ही संसार में शांति ला सकता है। और, यह शांति लाना आपकी जिम्मेदारी है, आप में से हरएक की जिम्मेदारी है--राजनेताओं की नहीं, सैनिकों की नहीं, वकीलों की नहीं, व्यापारियों की नहीं और न ही साम्यवादियों या समाजवादियों की--किसी अन्य की नहीं। इस बात के लिये आप जिम्मेदार हैं कि आप अपना जीवन कैसे जीते हैं, अपना दैनिक जीवन किस तरह व्यतीत करते हैं। यदि आप संसार में शांति चाहते हैं तो स्वयं आपको शांतिपूर्वक रहना होगा, परस्पर घृणा को, ईर्ष्या को, शक्ति-अधिकार प्राप्ति की लालसा को तिलांजलि देनी होगी, स्पर्धा की दौड़ को नकारना होगा, क्योंकि इनसे मुक्त होने पर ही आप में प्रेम अवतरित होगा। जो प्रेम कर सकता है, केवल वही मन जानता है कि शांतिपूर्वक कैसे रहा जाता है।

Edited with Infix PDF Editor
- free for non-commercial use.
To remove this notice, visit:
www.iceni.com/unlock.htm